मध्यप्रदेश के प्रगतिशील कोलाज कलाकार अमृतलाल वेगड़
एक समीक्षात्मक अध्ययन

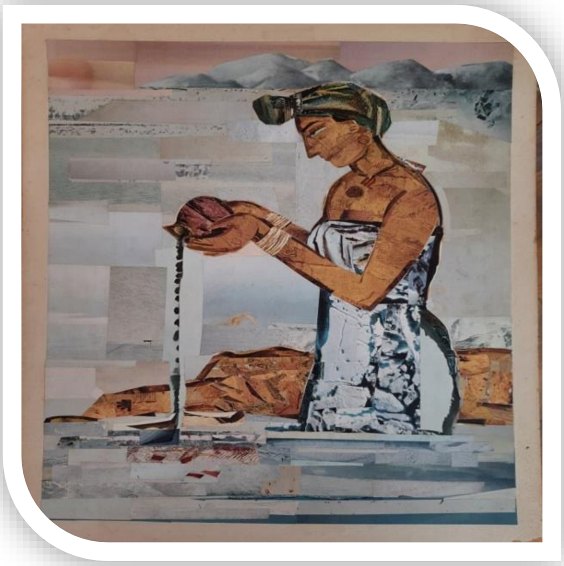

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा
से चित्रकला विषय में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. नमिता त्यागी

असिस्टेंट प्रोफेसर

शोध छात्रा

प्रिया दत्त उपाध्याय

चित्रकला विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा-282005

2022

विषय सूची

➢ शोध संकल्पना 1

➢ सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन 3

➢ परिकल्पना 4

➢ उद्देश्य 4

➢ चर 5

➢ कार्य प्रणाली 5

➢ अनुसंधान अभिकल्प 5

➢ प्रदत्त संकलन 5

➢ प्राथमिक स्त्रोत 5

➢ द्वितीयक स्त्रोत 6

➢ प्रतिदर्श आकार 6

➢ सीमायें 6

➢ आधुनिक युग में प्रासंगिकता 6

शोध संकल्पना

अपने अंतर्मन की अभिव्यक्ति को ही कला कहते है। कला में मानव मन में संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिन्तन को मोड़ने व अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है।

कलाओं में श्रेष्ठ कला है चित्रकला। मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरण की प्रवृत्ति रखता है। जैसा देखता है उसी प्रकार अपने को ढ़ालने का प्रयत्न करता है यही उसकी आत्माभिव्यंजना है। अपनी रंगों से भरी तूलिका से चित्रकार जन भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है।

अपनी पुस्तक रिपब्लिक में प्लेटों ने कला को मूल प्रत्यय के अनुकरण का अनुकरण कहा है जैसे- बढ़ई महान शिल्पी ईश्वर के द्वारा निर्मित मूल बिंब का अनुकरण करके पलंग बनाता है। चित्रकार इस पलंग का अनुकरण कर चित्र बनाता है। साहित्यकार भी उसी बढ़ई द्वारा बनाए गए अनुकरण को अपनी रचनाओं का विषय बनाता है। अनुकरण की यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। व्यक्ति जो देखता है उसी का अनुकरण करने की कोशिश करता है जैसे- आदिमानव ने गुफाओं में जीवन का अनुकरण किया वैसे ही आगे आने वाले कलाकारों ने सामाजिक जीवन के अनुकरण के आधार पर चित्रों का निर्माण किया। अनुकरण जहाँ चित्रकार को प्रेरणा देता है वहीं नवीन कला, नवीन विचारों, नवीन आकारों और नवीन पद्धतियों को जन्म देता है।

मध्यप्रदेश निवासी अमृतलाल वेगड़ ने प्रथम बार जब कला धरा पर अपने पद चिन्हित किये तब से अंत तक वह नर्मदा नदी के सौन्दर्य को अपनी अनुभूतियों में संजोते रहे और जीवन भर उसके सौन्दर्य के अनुकरण से अपनी कला रचनाओं को सार्थक दिशा में प्रेरित करते रहे। 3 अक्टूबर 1928 को जबलपुर मध्यप्रदेश में जन्में अमृतलाल वेगड़ कलाकार होने के साथ साथ एक लेखक भी थे।

उन्होनें नर्मदा नदी से प्रभावित होकर उसके संरक्षण एवं सौन्दर्य वर्णन करने के लिये करीब 4000 किमी0 लम्बी नर्मदा नदी की पदयात्रा की तथा उसके अनुभवों एवं और नदी के अद्भुत सौन्दर्य को चित्रों के माध्यम से अपनी पुस्तकों में प्रभावी तरीके से समेटा। 'शिखर सम्मान' 'शरद जोशी सम्मान', 'सृजन सम्मान' तथा 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन' जैसे महत्वपूर्ण सम्मानों से सुभोभित श्री अमृतलाल वेगड़ नर्मदा प्रेम से ओत प्रोत रहे हैं। उन्होनें

अपने धर्म, कर्म और संस्कृति में नर्मदा -सौन्दर्य को देखा। वेगड़जी का बाल्यकाल और प्रारंभिक शिक्षा जबलपुर में हुई। बाल्यकाल से ही आपकी चित्रकला में रूचि थी जिससे आपकी कला शिक्षा शांति निकेतन के कलात्मक वातावरण व कला गुरू नन्दलाल बोस, बिनोद बिहारी मुखर्जी तथा रामकिंकर बैज के सानिध्य में प्राप्त हुई। 1952 में विश्व भारती शांति निकेतन से ललित कला की उपाधि प्राप्त कर 1953 में जबलपुर आये और कला प्राध्यापक के पद पर रहकर कला साधना करते रहे। उन्होनें वाश तकनीक, जलरंग, टेम्परा विधि के साथ-साथ आपने अनेक म्यूरल्स भी र्निमित किये। सन् 1977 में प्रथम नर्मदा यात्रा के साथ नर्मदा के रेखांकन बनाये और बाद में उन्हीं रेखांकनों को कोलाज में परिवर्तित किया तथा वही से इनकी कला शैली में कोलाज विधा का प्रादुर्भाव हुआ। पर्यावरण से जुड़े श्री अमृतलाल वेगड़ की अपनी पहचान उनकी कोलाज कृतियाँ एवं साहित्य से हैं। नर्मदा की परिक्रमा से संबंधित उनके चित्रों की प्रदर्शनी मुबंई, कोलकाता, भोपाल, नई दिल्ली सहित देश के विभिन्न शहरों में प्रदर्शित की गई। सन् 1980 में सर्वप्रथम नर्मदा यात्रा के दौरान सृजित की गई कृतियों को प्रदर्शित किया और वहीं से इनकी एकल व सामूहिक प्रदर्शनियों का सिलसिला आरम्भ हो गया। उन्होनें जहाँगीर आर्ट गैलरी, मुम्बई भारत भवन भोपाल में एकल प्रदर्शनी का आयोजन कर नर्मदा के कलात्मक सौन्दर्य, संस्कृति और उसके पर्यावरणीय महत्व को जन मानस तक पहुँचाने का यथा उचित प्रयास किया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी नियोजित अनुसंधान कार्य का सबसे पहला तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन करके किये जा रहे अनुसंधान कार्य की सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक पृष्ठभूमि तैयार करना है। मैनें अपने शोध के विषय के अध्ययन हेतु अनेक पुस्तकों, संदर्भित ग्रन्थों व पत्र - पत्रिकाओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन द्वारा समय विशेष की सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, भौगोलिक तथा कलात्मक स्वरूप का ज्ञान होता है।

इनमें से कुछ पुस्तकों का अध्ययन निम्नवत् है-

‘भारतीय चित्रकला’ ‘वाचस्पति गैरोला’ द्‌वारा लिखित पुस्तक जिसमें प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक युग तक की संपूर्ण चित्रकला परंपरा का अध्ययन किया जिससे मुझे चित्रकला परंपरा के शास्त्रीय एवं व्यावहारिक दोनों पक्षों का ज्ञान प्राप्त हुआ। ‘भारतीय कला’ ‘वासुदेवशरण अग्रवाल’ द्‌वारा लिखित है इस पुस्तक के माध्यम से आदिकाल से चली आ रही आदिमानव कलाओं, प्रागैतिहासिक चित्रों, खुदाई से प्राप्त अवशेषों की समय सीमा व चित्र शैली का अध्ययन करने में सहायता प्राप्त हुई।

‘PABLO PICASSO’ CARSTEN- PETER WORNCKE द्‌वारा लिखित पुस्तक से मैंने पाश्चात्य कला के अन्तर्गत कोलाज कला की जानकारी व कलाकार द्‌वारा बनाये गये कोलाज चित्रों को देखने व समझने का प्रयास किया। ‘अमृतलाल वेगड़’ द्‌वारा रचित ‘नर्मदा तुम कितनी सुन्दर हो इस पुस्तक में नर्मदा की प्रकृति एवं भव्यता के साथ-साथ मानवता के सहज सौन्दर्य का वर्णन उनके कोलाज चित्रों एवं लेखन शैली का ज्ञान प्राप्त किया। अन्य पुस्तक ‘अमृतलाल वेगड़’ द्‌वारा चित्रित ‘नर्मदा रेखांकन’ इस पुस्तक में नर्मदा यात्रा वृतांत से सम्बन्धित उनके रेखाकंन से नर्मदा व उसकी सहायक नदियों के किनारे बसे जनजीवन भारतीय संस्कृति, पहाड़, जल प्रपात आदि देखने को मिले।

इन सब पुस्तकों के अध्ययन से भारतीय आधुनिक कला प्रागैतिहासिक शैल चित्र कोलाज कला तथा अमृतलाल वेगड़ की चित्र शैली का समन्वित अध्ययन प्राप्त हुआ जिसके माध्यम से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि अमृतलाल वेगड़ ने अपनी कृतियों के माध्यम से भारतीय कोलाज कला को एक नवीन एवं रचनात्मक विचारधारा से प्रेरित किया। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप् मैं उनकी सम्पूर्ण कार्यशैली उनके दृष्टिकोण को भारतीय आधुनिक कला परिदृश्य के अन्तर्गत अपने शोध कार्य के माध्यम से प्रस्तुत करूँगी।

परिकल्पना

अनुसंधान प्रक्रिया में विश्वसनीय ज्ञान प्राप्त करने का एक माध्यम परिकल्पना है एवं इसके द्‌वारा ही अनुसंधानकर्ता स्पष्ट व मान्य निष्कर्षो तक पहुँचता है। परिकल्पना शोधकर्ता को अनुसंधान की दिशा में निर्देशित करती है।

चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना रहा है। पाषाण काल से ही आदिमानव ने गुफा में चित्रण करना आरम्भ कर दिया था और विकास के फलस्वरूप ही समकालीन कला में नये - नये आयामों, कला तकनीक का निरन्तर विकास होता आया है।

मेरे शोध शीर्षक 'मध्यप्रदेश के प्रगतिशील कोलाज कलाकार अमृतलाल वेगड़- समीक्षात्मक अध्ययन' द्वारा उनकी चित्रशैली व चित्रकला में नवीन प्रयोग कर कोलाज पद्धति में नर्मदा के सौन्दर्य चित्रण का वर्णन कर सभी के समस्त प्रस्तुत करने का सम्यक प्रयास करूँगी।

उद्देश्य:-

1. कलाकार के चित्रों के माध्यम से मध्यप्रदेश के सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश को प्रस्तुत करना।
2. अमृतलाल वेगड़ की जीवन शैली, कला साधना का कलात्मक दृष्टि से वर्णन।
3. अमृतलाल वेगड़ की कोलाज चित्र शैली व तकनीक का अध्ययन एवं अन्य कोलाज कलाकारों का भारतीय कला में योगदान।
4. अमृतलाल वेगड़ की कलाकृतियों के माध्यम से सामाजिक एवं पर्यावरणीय जन चेतना के मूल्यों का उदघाटन।
5. अमृतलाल वेगड़ का भारतीय कोलाज कला परिदृश्य में योगदान।

चर:-

- भ्रमण
- कलाकृतियाँ
- इण्टरनेट बेबसाइट्स

कार्य प्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प -

मैनें अपने शोध कार्य 'अमृतलाल वेगड़ की कला यात्रा का वस्तु विश्लेषण विधि एवं वर्णात्मक शोध अभिकल्प का चयन किया है।

प्रदत्त संकलन -

तथ्यों का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होगा।

प्राथमिक स्रोत -

कलाकार की कृतियों के छायाचित्र, कलाकार द्वारा लिखित स्वयं के लेख एवं उनकी कृतियाँ।

द्वितीयक स्रोत -

कलाकार की कृतियों के छायाचित्र, लेख पुस्तकें, इण्टरनेट वेबसाइट्स।

प्रतिदर्श आकार -

इस शोध के अंतर्गत लगभग 150-200 छायाचित्रों का चयन किया गया है।

सीमाएँ -

मैनें अपने शोधकार्य को ध्यान में रखते हुए अमृतलाल वेगड़ की कला के 150 से 200 चित्रों का चयन किया है जो मेरे शोध का मुख्य स्रोत रहेगें।

निष्कर्ष -

कला मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी है। भारत में चित्रकला प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही है तथा वर्तमान तक कला ने अनेक नवीन दर्श स्थापित किये है विश्व पटल पर अपनी एक पहचान बनायी है। इसी सन्दर्भ में अमृतलाल वेगड़ की कला सौन्दर्यानुभूति एवं अपने समकालीन परवेश के समन्वय को प्रकट करती हैं जो अध्ययन का मुख्य विषय है।

आधुनिक युग में प्रांसगिकता -

इस शोध अध्ययन में आधुनिक भारतीय कलाकार अमृतलाल वेगड़ की कलाकृतियों के कलात्मक पक्ष तथा विषय तकनीकी के महत्वपूर्ण पक्ष को आधुनिक कला के परिदृश्य में प्रस्तुत किया जायेगा, जिसके फलस्वरूप मेरा शोध

प्रबन्ध भविष्य के शोधार्थियों हेतु उनके ज्ञानवर्धन में भी सहायक सिद्ध होगा।

विषय सूची

भूमिका:- कोलाज कला का प्रादुर्भाव

प्रथम अध्याय :- मध्यप्रदेश की कला पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय:- आधुनिक भारतीय कोलाज कलाकारों का संक्षिप्त परिचय

(नन्दलाल बोस, बिनोद बिहारी मुखर्जी, के.जी. सुब्रमनियम, सतीश गुजराल)

तृतीय अध्याय:- आधुनिक भारतीय कलाकार अमृतलाल वेगड़ का व्यक्तित्व

3.1 आरम्भिक जीवन

3.2 शिक्षा

3.3 कला प्रेरणा स्रोत

3.4 पुरस्कार

3.5 प्रदर्शनियाँ

चतुर्थ अध्याय:- अमृतलाल वेगड़ की कलाकृतियों का कलात्मक अध्ययन

4.1 विषय वस्तु

4.2 शैली एवं तकनीक

(वाश, टेम्परा, रेखांकन एवं कोलाज)

पंचम अध्याय:- अमृत लाल वेगड़ की कलाकृतियों का भावात्मक विश्लेषण

षष्टम अध्याय:- अन्य भारतीय समकालीन कोलाज कलाकारों के साथ समीक्षा

उपसहार:- अमृतलाल वेगड़ का भारतीय कला में योगदान।

परिशिष्ट :- सन्दर्भग्रन्थ सूची

विवलियोग्राफी

इण्टरनेट वेबसाइट्स

चित्र सूची

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका:- कोलाज कला का प्रादुर्भाव

इसके अन्तर्गत कोलाज कला का प्रादुर्भाव, विकास एवं इसी परिपेक्ष्य में अमृतलाल वेगड़ की कला साधना का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रथम अध्याय:- मध्यप्रदेश की कला पृष्ठभूमि

इस अध्याय के अन्तर्गत मध्यप्रदेश की कलात्मक पृष्ठभूमि को बताते हुये मध्यप्रदेश के प्रमुख कलाकार व वर्तमान में कार्यरत कोलाज कलाकारों की कार्यशैली का परिचय प्रस्तुत करूँगी।

द्वितीय अध्याय:- आधुनिक भारतीय कोलाज कलाकारों का संक्षिप्त परिचय

इस अध्याय के अन्तर्गत भारतीय कोलाज कलाकारों के माध्यम से कलाशैली व उनके चित्रों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करूँगी।

तृतीय अध्याय:- आधुनिक भारतीय कलाकार अमृतलाल वेगड़ का व्यक्तित्व इस अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक भारतीय कलाकार अमृतलाल वेगड़ का व्यक्तित्व, आंरभिक जीवन, शिक्षा, कला प्रेरणा स्रोत, पुरस्कार एवं प्रदर्शनियों का विस्तारपूर्वक वर्णन करूँगी।

चतुर्थ अध्याय:- अमृतलाल वेगड़ की कलाकृतियों का कलात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय में अमृतलाल वेगड़ की कलाकृतियों का कलात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा जिसमें विषय वस्तु, उनकी विभिन्न कार्यशैली, तकनीक (वाश, टेम्परा, रेखांकन एवं कोलाज) का वर्णन उनके चित्रों के माध्यम से तथा चित्रकला के नियम सिद्धान्तों के अनुसार किया जायेगा।

पंचम अध्याय:- अमृतलाल वेगड़ की कलाकृतियों का भावात्मक विश्लेषण

इस अध्याय के अन्तर्गत अमृतलाल वेगड़ की कलाकृतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, नर्मदा के तटीय क्षेत्रों

का जनजीवन व प्राकृतिक सौन्दर्य का भावात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करूँगी।

षष्टम अध्याय:- अन्य भारतीय समकालीन कोलाज कलाकारों के साथ समीक्षा

षष्टम अध्याय में कलाकार अमृतलाल वेगड़ का अन्य भारतीय समकालीन कोलाज कलाकारों के साथ समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगी।

उपंसहार:- अमृतलाल वेगड़ का भारतीय कला में योगदान।

कलाकार अमृतलाल वेगड़ का भारतीय कला में योगदान का वर्णन प्रस्तुत किया जायेगा।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

- बाजपेयी, डॉ. राजेन्द्र, 1989, भारतीय चित्रकला, साहित्य निकेतन, गिलिस बाजार, कानपुर
- वेगड, अमृतलाल, 2007, सौंदर्य की नदी नर्मदा, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
- शुक्ल, रामचन्द्र, 2009, कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, फोकस इंफोटेक प्रकाशक, केरल
- भारद्वाज, विनोद, 2006, वृहद्व आधुनिक कलाकोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रताप, रीता, 2020, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- कुमार, अरविन्द सिंह, 1994, प्राचीन भारतीय मूर्तिकला एवं चित्रकला, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
- वेगड, अमृतलाल, 2018, अमृतस्य नर्मदा, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

Bibliography

- Jhavery, Amrita , 2005, A Guide to 101 Modern Art Contemporary Indian Artist, Indian Book House Pvt. Ltd.
- Brommer Gerald 1994, Collage Techniques : A Guide for Artists and illustrators. Watson – Guptill ; First Edition
- Chaitanya, Krishna 1994, A History of Indian Painting the Modern Period, Shakti Malik AbhinavPublication, New Delhi
- Greenfeld, Howard 1971, Picasso An Introduction, Follett Publishing Company, Chicago
- Brommer, Gerald F.1978, The Art of Collage, Davis Publication in Worcester

- Neubauer, Crystal ,2015, The Art of Expressive Collage, North Light Books ; illustrated Edition

Internet Websites

- bharatdiscovery.org
- hi.m.wikipedia.org
- www.navjivanindia.com
- hindi.indiawaterportal.org
- www.aajtak.in
- maanarmada.org
- in.pinterest.com

परिशिष्ट - चित्र सूची

चित्र - 1 ग्रामीण महिलाएं

(स्रोत :- कलाकार के व्यक्तिगत संग्रह से)

चित्र - 2 कीर्तन मण्डली

(स्रोत :- कलाकार के व्यक्तिगत संग्रह से)

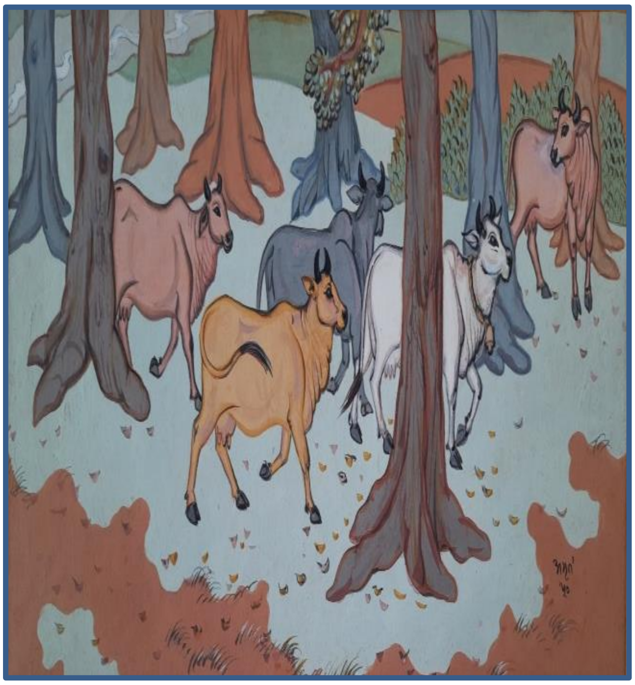

चित्र - **3** भ्रमण
(स्रोत :- कलाकार के व्यक्तिगत संग्रह से)

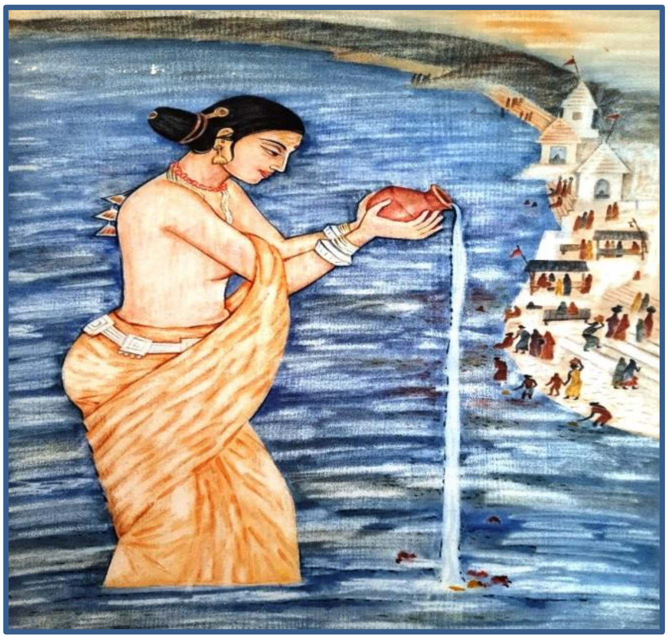

चित्र - **4** नर्मदांजलि
(स्रोत :- कलाकार के व्यक्तिगत संग्रह से)

चित्र - **5** रात्रि में घाट
(स्रोत :- कलाकार के व्यक्तिगत संग्रह से)

चित्र - 6 स्नान
(स्रोत :- कलाकार के व्यक्तिगत संग्रह से)